कवि-परिचय :

नाम : विश्वनाथ मिश्र 'पंचानन'

जनम-तिथि : 2.1.1935

जनम-अस्थान : व्यापुर, मनेर, पटना

निवास : प्रणत-प्रणीत-प्रणति, लेन नं०-3ए,
बैंक कॉलोनी गोलारोड, दानापुर, पटना

पेसा : बिहार सरकार में जिला कल्याण पदाधिकारी
पद से सेवा निवृत।

इनकर परकासित पुस्तक (1) गिरइत भित्ति उठइत भित्ति – मगही नाटक हिन्दी कविता के कइएक पुस्तक– (2) प्रयाण गीत (3) धरती की पुकार पर (4) धरती प्यासी है (5) गाँधी की आत्मा (6) गीत सुनायें गायें हम (7) सांध्य सुमन (8) गुजरे जो दशक पाँच।

'कहाँ भुलायल गाँव' कविता में विश्वनाथ मिश्र 'पंचानन' गाँव के मौजूदा दुखदायी स्थिति के बरनन कयलन हे। गाँव के अतीत बड़ा मोहक रहल हे बाकि आज गाँव भूख, गरीबी, जात-पात में भुला के रह गेल हे। आज गाँव एके-47 राइफल के नाल पर टँगल हे। सउँसे गाँव धुआँ से भर गेल हे आउ इहाँ–उहाँ सब जगह कैक्टस के पड़ाव बन गेल हे।

कहाँ भुलायल गाँव

बारूदी ई गंध से अब तो महक रहल हे गाँव,
गेंदा गुलाब के जिनगी के लगल इहाँ हे दाँव।

सौदागर मिल जाये मौत के न जाने कउन ठाँव,
थर-थर, थर-थर देह कँपइत हे ठिठकल-ठिठकल पाँव।

सिसक रहल हे हवा भोर के लेके गहरा घाव,
लहूलुहान हो गेले धूप, चिन्दी-चिन्दी छाँव।

घायल-लथड़ल नाता-रिस्ता, केकरा लागूँ पाँव,
मरघट बन गेल ठौर-ठिकाना कहाँ टिकाउँ नाव।

परदेसी चुप सोच रहल कइसे ई भेल दुराव,
गाँव के गोरी के मन में भी आ गेले बदलाव।

ए०के० सैंतालिस से सहमल सुत्थर-सरल सोभाव,
धुआँ-धुआँ छा गेल दिसा में करिया हो गेल गाँव।

गिरवी भेले मिलन-वसन्ती, द्वेस-इरसा के भाव,
आज पड़ोसिन भउजी से भी रहल न कोई लगाव।

मोड़-मोड़ पर इहाँ-उहाँ कैक्टस के पड़ल पड़ाव,
कहाँ भुलायल बेला-बेली, सोनजूही के गाँव?

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. गाँव आज कउन गंध से महक रहल हे?
2. आज गाँव ठिठकल काहे हे?
3. ठौर-ठिकाना के बारे में कवि का बता रहल हे?
4. पड़ोसिन भउजी के संबंध आज कइसन हो गेल हे?
5. मोड़-मोड़ केकर पड़ाव हे?

लिखित :

1. आज गाँव के बिगड़ल स्थिति के बरनन करऽ।
2. नीचे लिखल पद्यांस के सप्रसंग व्याख्या करऽ :

धुआँ-धुआँ छा गेल दिसा में,
करिया हो गेल गाँव।
गिरवी भेले मिलन वसंती
द्वेस-इरसा के भाव।

3. गाँव के खराब स्थिति बतावेला कवि कउन सबद के परयोग कयलन हे?

4. आज गाँव के उपमा मरघट से काहे देल जाइत हे?

5. कैक्टस बिंब के भाव स्पस्ट करऽ।

6. कविता के सिल्प आउ भाव-सौंदर्य बतावऽ।

भासा-अध्ययन :

1. कविता से मुहावरा चुन के लिखऽ आउ ओकर अरथ बतावऽ।

2. नीचे लिखल सबद में छिपल भाव के बतावऽ:

   सोनजूही, कैक्टस, लथरल, मरघट, चिंदी-चिंदी, ठिठकल, कँपइत, बारूदी गंध, लहूलुहान धूप, ए.के.-47 ।

3. कविता के कउन पंक्ति में अनुप्रास अलंकार आयल हे ?

4. निम्नलिखित उपसर्ग से सबद बनावऽ :

   लू, मर, पर, ति, सो

5. कविता में से नीचे लिखल अरथ से संबंधित पंक्ति बतावऽ:

   (क) मौत कहाँ हो जायत, कोई ठिकाना न हे।

   (ख) गाँव करिया हो गेल हे।

   (ग) घाव गहरा हो गेल हे।

   (घ) गाँव सरल स्वभाव सहमल हे।

   (च) सगरो कैक्टस उपज गेल हे।

6. कविता में आयल ठेठ मगही सबद के एगो सूची बनावऽ आउ ओकर माने हिंदी में बतावऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. 'कहाँ भुलायल गाँव' कविता से मिलइत-जुलइत कोई दूसर कविता चुन के लावऽ आउ कलास में सुनावऽ।

2. गाँव के स्थिति में सुधार करसे होत, एकरा पर विद्यालय में एगो गोस्ठी के आयोजन करऽ।

सब्दार्थ :

ठिठकल	:	रुकल
सिसकना	:	रोना
चिन्दी-चिन्दी	:	छितराना
दुराव	:	दूरी
सहमल	:	डेरायल
इरसा	:	जलन
द्वेस	:	बैर के भाव
कैक्टस	:	काँटेदार पौधा
सोनजूही	:	एक तरह के फूल